अप्रैल 2016 मूल्य 15 रुपये

रूपरेखा

सदाचार ~ सद्विचार ~ सत्संस्कार

महावीर

बनाम

परंपरागत

अहिंसा

होली हैः जरा सुनें क्या कहते हैं रंग ▼ पृष्ठ संख्या-28

–मानव मंदिर गुरूकुल के वार्षिक परीक्षा परिणाम के पश्चात छात्र और छात्रायें पदकों के साथ। परमपूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्रजी महाराज के आशीर्वाद और आप सब के सहयोग से यह संभव हो पाया है।

रूपरेखा

जीवन मूल्यों की प्रतिनिधि मासिक पत्रिका

मार्गदर्शन :
पूज्या प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री जी

संयोजना :
साध्वी कनकलता
साध्वी वसुमती

परामर्शक :
श्रीमती मंजुबाई जैन

प्रबंध संपादक :
अरुण कुमार पाण्डेय

सम्पादक :
श्रीमती निर्मला पुगलिया

व्यवस्थापक :
अरूण तिवारी

वार्षिक शुल्क : 150 रुपये
आजीवन शुल्क : 3000 रुपये

प्रकाशक
मानव मंदिर मिशन ट्रस्ट (रजि.)
पोस्ट बॉक्स नं. : 3240
सराय काले खाँ बस टर्मिनल के सामने,
नई दिल्ली - 110013
फोन नं. : 26345550, 26821348
Website : www.rooprekha.com
E-mail : contact@manavmandir.info

इस अंक में

जीवन एक उत्सव है
शिष्य ने एक दिन गुरु से पूछा- 'कौन सा दिन सेलिब्रेट करने के लिए सबसे अच्छा है?' गुरू ने कहा- 'मौत का दिन।' 03

वीर वही जो बंधन-मुक्त करे
धर्म के नाम पर नाना पाखंड और थोथे क्रियाकांडों का बोलवाला था। अपनी-अपनी मान्यताओं को सही बताने में सभी सम्प्रदाय अहं भूमिका निभा रहे थे। 10

ओम् वर्ण-विकार
'ओम्' की साधना में 'सोहम्' कैसे आ गया। पंच परमंष्ठि का स्वरूप ओम्मय है। ओम् की साधना पंचपरमेष्ठि की तरह है। 14

नचिकेता की कथा
गौतम वंश में उत्पन्न हुए एक महात्मा बाजश्रवा बहुत दानी व्यक्ति थे। उन्होंने दान करके बहुत यश प्राप्त किया था, इसलिए उनका नाम बाजश्रवा पड़ गया था। 22

गुरुत्वाकर्षी लहरें आइंस्टीन की विरासत
एल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत की अंतिम भविष्यवाणी गुरूत्वाकर्षी लहरें हैं। 27

आर्ष-वाणी

सरीरमाहू नावत्ति जीवो वुच्चइ नाविओ,
संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो।

शरीर नौका है। जीव नाविक है। संसार है समुद्र। महर्षि जन इस को तैर जाते हैं।

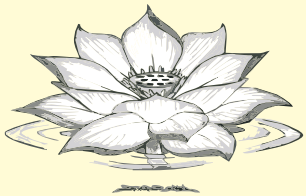

बोध-कथा

पड़ोसी

इमाम अबू हनीफा के पड़ोस में एक मोची रहता था। वह दिन भर तो अपनी झोंपड़ी के दरवाजे पर सुकून से बैठकर जूते गांठता रहता मगर शाम को शराब पीकर उधम मचाता और जोर-जोर से गाने गाता। इमाम अपने मकान के किसी कोने में रात भर हर चीज से बेपरवाह इबादत में मशगूल रहते। पड़ोसी का शोर उनके कानों तक पहुंचता मगर उन्हें कभी गुस्सा नहीं आता। एक रात उन्हें उस मोची का शोर सुनाई नहीं दिया। इमाम बेचैन हो गए और बेचैनी से सुबह का इंतजार करने लगे। सुबह होते ही उन्होंने आस-पड़ोस में मोची के बारे में पूछा- मालूम हुआ कि सिपाही उसे पकड़कर ले गए हैं क्योंकि वह रात में शोर मचा-मचा कर दूसरों की नींदें हराम करता था।

उस समय खलीफा मंसूर की हुकूमत थी। बार-बार आमंत्रित करने पर भी इमाम ने कभी उसकी दहलीज पर कदम नहीं रखा था मगर उस रोज वह पड़ोसी को छुड़ाने के लिए पहली बार खलीफा के दरबार में पहुंचे। खलीफा को उनका मकसद मालूम हुआ तो वह कुछ देर रुका फिर कहा- 'हजरत ये बहुत खुशी का मौका है कि आप दरबार में तशरीफ लाए। आपकी इज्जत में हम सिर्फ आपके पड़ोसी नहीं बल्कि तमाम कैदियों की रिहाई का हुक्म देते हैं। इस वाक्य इमाम के पड़ोसी पर इतना गहरा असर हुआ कि उसने शराब छोड़ दी ओर फिर उसने मोहल्ले वालों को कभी परेशान नहीं किया।

जीवन एक उत्सव है

शिष्य ने एक दिन गुरु से पूछा- 'कौन सा दिन सेलिब्रेट करने के लिए सबसे अच्छा है?' गुरु ने कहा- 'मौत का दिन।' शिष्य ने फिर पूछा, हम यह कैसे पता लगाएं कि मौत का दिन कौन सा है, वो तो किसी भी दिन हो सकती है।' तो गुरु बोले, 'फिर हर दिन को सेलिब्रेट करो।' शिष्य बोला- 'यदि शाम को सेलिब्रेट किया और मौत सुबह हो गई तब?' गुरु बोले, 'फिर तुम हर पल को सेलिब्रेट करो।'

वास्तव में हमारा यह जीवन एक उत्सव ही है और यह उत्सव हम पल होता रहना चाहिए। जीवन में ऐसा एक भी पल भी न हो, जब हम उत्सव से वंचित हों। फिर अब हम हर पल को उत्सव मानेंगे तब मौत जब भी आएगी, उस समय भी हम उत्सव में ही रहेंगे।

वैसे भी मौत का समय तो नया होने का समय है। जैसे हम पुराने कपड़े या पुराना फर्नीचर बदलते है और नए की खुशी मनाते हैं, ऐसे ही पुराने शरीर को छोड़ते समय दुख किस बात का, क्योंकि अब या तो शरीर नया मिलने वाला है या मुक्त होकर परमात्मा में लीन होने वाले हैं।

जब सोलह संस्कारों में से पंद्रह संस्कारों को हम बड़ी धूमधाम से मनाते हैं तो फिर सोलहवें संस्कार में गमी क्यों? इसको भी उत्सव का रूप दो। जिससे मरने वाले की जीवात्मा भी शांत रहे और जो नजदीकी हैं, वो भी दुख में न जाएं। बस हमें अपने नजरिये को बदलना होता है।

जो जिंदा हैं वो किसी और नजरिये से मृत्यु को देख रहे हैं और जो मरे हैं उनका नजरिया कुछ और है। जो जिंदा हैं वो स्वार्थ के नजरिये से मरने वाले को देखते हैं कि अब मेरा इससे जो स्वार्थ पूरा होना था वो नहीं होगा, इसलिए दुखी हो जाते हैं लेकिन मरने वाला तो उत्सव में है, क्योंकि वो मरा ही नहीं।

असलियत में हम मरते ही नहीं हैं। हम शरीर नहीं, आत्मा हैं और आत्मा को न जन्म छूता है न मृत्यु।

आत्मा तो हर पल आनंद की अवस्था में रहती है। मरता ये शरीर है और हम शरीर नहीं। यदि हम शरीर होते तो मरने के बाद घर वाले न जलाते। फिर जो हम हैं, वो मरने के बाद भी ज्यों के त्यों हैं। जीवन के इस रहस्य को जान कर हम अमर हो जाते हैं। जिससे अंदर से मरने का डर निकल जाता है।

ये मौत का डर ही है जो सभी को दुखी करता रहता है। जैसे ही हम इस डर से परे हो जाते हैं, उसी क्षण आनंद में आ जाते हैं।

प्रस्तुति : निर्मला पुगलिया

जन्म-जयंती पर विशेष

महावीर
बनाम परंपरागत अहिंसा

○ आचार्यश्री रूपचन्द्र

सारे प्रश्न अपने सर्वांगीण उत्तर के लिए एक ऐतिहासिक विश्लेषण और तटस्थ जांच-पड़ताल मांगते हैं। किन्तु जैन मुनिचर्या, जो अहिंसा का चरम उत्कर्ष मानी गई है, के अध्ययन से यह निष्कर्ष सहज ही सामने आता है कि परंपरागत जैसी अहिंसा का विकास नकारात्मक भूमिका पर हुआ है। और नकार पर खड़ी अहिंसा क्रमशः व्यक्तिपरक और व्यक्ति केन्द्रित होती चली जाए, इसमें आश्चर्य जैसा कुछ भी नहीं।

व्यक्ति परक अथवा व्यक्ति-केन्द्रित अहिंसा समाज के लिए आदरणीय हो सकती है, आचरणीय नहीं। उस स्थिति में समाज के स्तर पर न उसकी सकारात्मक भूमिका रह पाती है और न उसमें से किसी ऐसे वीर्य और पराक्रम की संभावना जो अपना व्यापक प्रभाव समूह जीवन पर छोड़ सके।

परंपरागत जैसी अहिंसा का विकास नकारात्मक भूमिका पर क्यों हुआ, क्यों वह समूह के दायित्व से विमुख रही, यह भी अपने में बहुत बड़ा प्रश्न है। इस परंपरा के आदि प्रवर्तक हैं भगवान ऋषभदेव और अंतिम तीर्थंकर हैं भगवान महावीर। इसको विरासत में जो भी मिला है। इतिहास साक्षी है कि अपने-अपने युग में इन महापुरुषों ने अपने अहिंसा-दीप्त धर्म-चक्र-प्रवर्तन से हिंसा पीड़ित अराजक मानव-समाज को एक युगान्तरकारी मोड़ दिया था।

भगवान ऋषभदेव समाज रचना के सूत्रधार हैं मानव सभ्यता के प्रणेता हैं, असि, मसि और कृषि-व्यवस्था के द्वारा सामूहिक दायित्व के प्रवर्तक है। समाज संरचना की सम्पूर्ण परिकल्पना के पीछे उनका विराट अहिंसा-दर्शन छुपा हुआ है। उनका सारा चिन्तन एवं अभिक्रम समाज सम्मुख है, विमुख नहीं।

भगवान महावीर की अहिंसा भी संपूर्ण प्रखरता ओर तेजस्विता से समाज की भूमिका पर अवतरित हुई है। व्यक्तिगत जीवन में तो वे पूर्ण अहिंसा-पुरुष ही है, किन्तु जहां कहीं भी वे खून और हिंसा देखते हैं, अहिंसा और अनुकम्पा का सावन आखों में लिए वहां पहुंच जाते हैं। यज्ञ हिंसा, दास-प्रथा, जाति दंभ, सत्ता-मद, माया अभिमान और नारी उत्पीड़न जैसी तत्कालीन दुःसाध्य सामाजिक बीमारियों का इलाज वे अहिंसा के मार्ग से ही सफलता पूर्वक करते हैं। कैवल्य-पूर्व तथा केवल ज्ञान-प्राप्ति के पश्चात् के घटना-प्रसंग उनके व्यापक अहिंसा पराक्रम के इतिहास-सम्मत प्रमाण हैं।

<u>तीर्थ-प्रवर्तन पावापुरी में क्यों?</u>

लगभग साढ़े बारह वर्षों के निरंतर तप और ध्यान-योग-साधना के पश्चात् भगवान महावीर को जंभिय ग्राम के सीमान्त श्यामक किसान के खेत में, विशाल शाल-वृक्ष के नीचे नदी के किनारे, दिन के अन्तिम पहर में, वैशाख शुक्ला दशमी को कैवल्य की प्राप्ति हुई। किन्तु दूसरे ही दिन वैशाख शुक्ला एकादशी को उन्होंने वहां से बहुत दूर पावापुरी को धर्म-तीर्थ-प्रवर्तन के लिए चुना। प्रश्न होता है अन्य अनेक नगर भी थे, कुछ तो पावापुरी की अपेक्षा बहुत समीप भी रहे होगें। उन में से किसी का भी चुनाव न करके भगवान ने पावापुरी का ही चुनाव क्यों किया?

इस का उत्तर भी बहुत स्पष्ट है। पावापुरी में उन दिनों सोमिल धनपति की ओर से एक विराट यज्ञ का आयोजन था। वह एक ऐसा यहायज्ञ जैसा था जिसमें न केवल मगध किन्तु सम्पूर्ण पूर्व तथा उत्तर भारत के शीर्ष पंडित-गण भाग ले रहे थे। अपार जन-समुदाय उस महायज्ञ ज्योति की ओर आकृष्ट हो रहा था। उन दिनों में पशुबलि का आम प्रचलन था। कहीं-कहीं नरबलि की प्रथा तक का उल्लेख मिलता है। भगवान महावीर को अहिंसा का सिंहनाद करना ही था। उस शंखनाद के लिए पावापुरी का वह यहायज्ञ सहजतया एक स्वर्णिम अवसर था। भगवान वहां पहुंचे। उनका अमृतवाणी से यहायज्ञ का नेतृत्व करने वाले इंद्रभूति गौतम आदि ग्यारह महापंहितों का हृदय परिवर्तन हुआ। फिर उन्हीं ग्यारह महापंडितों ने ही तीर्थ-प्रवचन के साथ प्रारंभ हुई महावीर की अहिंसा-क्रांति की कमान को संभाला। यह एक ऐसी महान् घटना थी जिसने न केवल यज्ञ-हिंसा की परंपरा को आमूलचूल झकझोर दिया, किन्तु इससे महावीर की अहिंसा क्रांति की भेरी पूरे पूर्वोत्तर भारत में गूंज उठी। यही वह कारण था जो जंभिय ग्राम से अत्यन्त दूर मध्यम पावा नगरी में सर्वज्ञ महावीर को धर्म-तीर्थ-प्रवर्तन के लिए खींचा था।

दास-प्रथा-उन्मूलन के लिए महान् संकल्प

महाश्रमण महावीर की घोर तपश्चर्या और सुमेरू की तरह अटल ध्यान-योग साधना की चर्चा अनेक जनपदों में विभक्त भारत में अविभक्त भाव से फैल रही थी। जो भी सुनता, श्रद्धा से वह नत-मस्तक हो जाता। महावीर इन श्रद्धा अभिवन्दनाओं के प्रति सर्वथा निःस्पृह थे। उनकी नजर तो बंधन मुक्ति पर टिकी थी। अपने को भी वे बंधनों से मुक्त देखना चाहते थे और समाज तथा राष्ट्र को भी, नहीं-नहीं पूरी मानव जाति को भी।

वह युग दास-प्रथा के भयंकर कोढ से पीड़ित था। पशुओं की तरह ही बाजारों, हाटों तथा मेलों में मनुष्यों की बोलियां लगती थी। उन दास-दासियों का जीवन जानवरों से भी बदतर होता था। महावीर अपने वचपन से ही इन अमानवीय प्रथा से उद्वेलित थे। उनके नयनों में वह पीड़ा कभी भी पढ़ी जा सकती थी।

आखिर अपने साधना-काल के बाहरवें वर्ष में उन्होंने मन ही मन एक कठोर संकल्प ले लिया। वह संकल्प पूरे राष्ट्र को इस दास-प्रथा की भयंकर व्याधि से मुक्त करने का था। उस संकल्प के अनुसार महावीर नियत समय पर नगर में आहार चर्या के लिए निकलते किन्तु बिना आहार लिए ही स्थान पर लौट आते। ऐसा क्रम पांच-सात दिनों के लिए चलता तो शायद लोगों को पता भी नहीं चलता। लेकिन ऐसा करते-करते चार माह बीत गए। अब तो कौशाम्बी नगरी पूरी ही हिल उठी। सबके मुख पर एक ही चर्चा थी। महातपस्वी महावीर पिछले चार माह से आहार ग्रहण नहीं कर रहे हैं। ऐसा कठोर तप वे किसी ध्यान-योग के प्रयोग के तहत कर रहे थे, ऐसी बात भी नहीं थी। क्योंकि आहार चर्या के लिए वे नियमित रूप से नगर में भिक्षार्थ निकलते भी थे। लोग उन्हें अत्यन्त आदर और श्रद्धा-भावना से दान देना भी चाहते थे। फिर भी वे बिना कुछ लिए वापस लौट-आते थे। इसका कारण यही हो सकता था कि उनको अपने अभिग्रह संकल्प के अनुसार आहार सुलभ नहीं हो रहा था। किन्तु वह अभिग्रह या संकल्प क्या हो सकता है, इसका पता कौशांवी नरेश शतानीक एवं उनका बुद्धिमान महामात्य सुगुप्त भी नहीं लगा सके, फिर जन साधारण का तो कहना ही क्या?

ऐसा करते-करते पांच महीना और पचीस दिन बीत गए। सहसा पूरे शहर में अहो दानं-अहो दानं का संवाद आर-पार पहुंच गया। लोगों ने जाना, भगवान महावीर का अभिग्रह पूरा हो गया। आज उन्होंने आहर ग्रहण कर लिया। इस संवाद के साथ यह जिज्ञासा स्वाभाविक थी किन

हाथों को इस दान का सौभाग्य मिला। पर उसके उत्तर से सब कोई आश्चर्य चकित और अवाक् थे। क्योंकि उन हाथों का सम्बन्ध न किसी राज परिवार से था, न किसी श्रेष्ठि-परिवार से, न किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय वर्ग से था और न वैश्य वर्ग से। वे हाथ थे एक दासी के और भी एक ऐसी अभागी दासी, जिसके हाथों में हथकड़िया थीं पावों में बेड़ियां, मुण्डित सर पर शस्त्र के घाव थे, वस्त्र के नाम पर एक अत्यन्त साधारण कछोटा, जो तीन दिनों से भूखी थी और समाज द्वारा बार-बार पीड़ित ओर प्रताड़ित थी। उस दासी के हाथों से आहार जो मिला, वे थे उड़द के बासी बाकुले जो उस समय पशुओं को खाने के लिए दिए जाते थे। महातपस्वी ने उन उड़द वाकुलों से ही पांच माह और पचीस दिन के तप की पूर्णाहुति थी।

महावीर ने अपने तप की पूर्णाहुति में महत्व नहीं दिया, राजमहल की मनुहारों को, धनपतियों की प्रार्थनाओं को, कुलीनों की भावनाओं को और अजात्य आस्थाओं को किन्तु सम्मान दिया एक पीड़ित-प्रताड़ित-अपमानित दासी के अंतर से निकली आसूं भरी प्रकार को। यह कदम प्रकारान्तर से उच्च कुलीन समाज पर एक गहरी चोट थी। किन्तु अहिंसा के पुजारी कभी अपमान या चोट की भाषा में न सोचते हैं और न ही विश्वास करते हैं। उनका तो प्यार ओर सम्मान की भाषा में विश्वास होता है। महावीर ने एक दासी की अटूट आस्था ओर अक्षय भक्ति को जो प्यार और बहुमान दिया, उसने दास प्रथा के युग-दंश से तत्कालीन दलित समाज को सदा के लिए मुक्त कर दिया। वह दासी भी वन्दनीय ओर अभिनन्दनीय बन गई।

कौशाम्बी नरेश शतानीक अपने अंतपुर मंत्री-परिवार तथा प्रतिष्ठित नागरिकों के साथ वहां स्वयं आए। उन्होंने उस सौभाग्य शीला दासी के चरणों की धूल को अपने माथे से लगाया। वह दृश्य कितना अद्भुत रहा होगा जहां एक पद-दलित दासी के चरणों में पूरे राज्य का वैभव विनत भाव से नतमस्तक खड़ा था। इसके साथ ही तत्कालीन समाज उस दास प्रथा के अभिशाप से मुक्त हो गया।

उस दासी का नाम था बसुमती, जो इतिहास के पन्नों में महासती चंदनबाला के रूप में विश्रुत हुई। भगवान महावीर के विशाल साध्वी-तीर्थ का नेतृत्व सती-शिरोमणि चंदनबाला ने ही संभाला था।

<u>नारी मुक्ति के प्रचेता</u>

एक बार आचार्य विनोवा भावे ने वार्ता-प्रसंग में कहा था कि भगवान महावीर पहले इतिहास-पुरुष हैं जिन्होंने नारी-शक्ति के समर्थन में पूरे साहस और विश्वास के साथ आवाज उठाई थी।

भगवान बुद्ध भी क्रांति-चेता थे, किन्तु इस दिशा में वे भी पूरा साहस नहीं दिखा पाए थे। भगवान महावीर ने अपनी तीर्थ स्थापना में नारी जाति को समान स्थान और अधिकार दिए। नारी जाति को उस युग में शिक्षा का अधिकार तो था ही नहीं, धर्म-शास्त्र-श्रवण से भी उसे वंचित रखा जाता था। नारी-मुक्ति-प्रचेता के रूप में भगवान ने ज्ञान-आराधना, धर्म-साधना और निर्वाण तक ही अर्हता नारी समाज को प्रदान की।

जातिवाद का निरसन

महावीर ने जाति के आधार पर श्रेष्ठता या हीनता की तत्कालीन सामाजिक अवधारणा का निरसन किया। उनके धर्म-तीर्थ में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य-वर्ग की तरह शूद्र वर्ग के व्यक्ति भी सम्मिलित हुए। उन्होंने व्यवस्था दी कि धर्म तीर्थ में सम्मिलित व्यक्ति न ब्राह्मण और क्षत्रिय है, न वैश्य और शूद्र वह मात्र श्रमण है या श्रमणोपासक। इतना ही नहीं, चाण्डाल-पुत्र महामुनि हरिकेशबल की प्रशंसा में आगम साहित्य में एक अध्ययन देते हुए उन्होंने मुक्त कंठ से कहा-

सक्खं खु दीसई तवो विसेसो
न दीसई जाइ-विसेस कोई।

साक्षात् दिख रही है तप की महिमा, नहीं है यहां जाति की विशेषता। उन्होंने अपनी धर्म-क्रांति में जन्मना नहीं, कर्मणा श्रेष्ठता की व्यवस्था दी।

जन भाषा में प्रवचन

राज-मद, जाति-मद की तरह भाषा-मद उस समय अपने चरम उत्कर्ष पर था। कुलीन वर्ग की भाषा संस्कृत थी। उसे देव-भाषा भी कहा जाता था। स्त्री तथा शूद्रों को संस्कृत भाषा न सीखने का अधिकार था, न बोलने-सुनने का। धर्म-प्रवचन भी संस्कृत में ही होते थे।

भगवान महावीर ने घोषणा की कि उनके प्रवचन संस्कृत में नहीं, जन-भाषा में होंगे। इसलिए जैन आगम तत्कालीन जन-भाषा अर्धमाग्धी प्राकृत में संकलित है।

इस प्रकार भगवान महावीर ने पूरे देश में स्वतंत्रता, समता तथा समानता के मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए एक सफल अहिंसात्मक क्रांति का सूत्रपात किया। वे संभवतः प्रथम इतिहास-पुरुष हैं जिन्होंने अहिंसा में से पराक्रम प्रकट करके युग-धारा को एक युगान्तरकारी दिशा प्रदान की।

वर्तमान युग में महात्मा गांधी ने एक महान् देश को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त करके विश्व-राजनीति में अहिंसा के मूल्यों की प्रतिष्ठा की। प्रश्न फिर वही है जिस परंपरा को भगवान महावीर जैसा महापराक्रमी अहिंसा-नायक मिला, वह अपने हजारों वर्षों के इतिहास में भी

अहिंसा में से किसी वीर्य पराक्रम को प्रकट क्यों नहीं कर सकी? विश्व पटल पर वह अहिंसा की सकारात्मक प्रखरता उद्‌भावित क्यों नहीं कर सकी? विश्व शांति के नाम पर बनने वाले विनाशकारी शस्त्रों के खिलाफ वह अहिंसा को एक सशक्त समर्थ विकल्प के रूप में खड़ा क्यों नहीं कर सकी।

मुझे नहीं पता अहिंसा प्रतिष्ठा के इस संदर्भ में जैन परंपरा को अपनी भूमिका का अहसास है भी अथवा नहीं। वह इस दिशा में सोचने के लिए तैयार है भी अथवा नहीं? यह तब ही संभव है जब अपनी नकारात्मक अहिंसा-शैली के स्वरूप में परिवर्तन करने का उसमें साहस हो। अपनी जड़ परंपराओं को उसी तरह ढ़ोते हुए अहिंसा विज्ञान ओर अहिंसा-प्रशिक्षण की बातें बेमानी ही प्रमाणित होती हैं। ◆◆

कड़वा सच

एक मंच पर जैन धर्म के सभी पंथ के साधु-साध्वी जी का बहुत समागम हुआ, जिसमें श्वेताम्बर, स्थानकवासी, दिगंबर, तेरापंथी के बड़े-बड़े साध्वी-साध्वी जी थे।

सब जैन धर्म के पंथों को एक होने का उपदेश दे रहे थे। हम सब एक है हम में कोई भेद भाव नहीं है हम सब जैन है ऐसी बड़ी-बड़ी बातें कर रहे थे...

तभी सामने बैठे श्रावकों में से एक श्रावक खड़ा हुआ और उसने जो बात बोली वो सब के दिलों में छू गयी...

उसने कहा महाराज साहेब जी आप जो बात कह रहे हो वो बात सही है, पर क्या यह बता सकते हैं कि हम श्रावकों में से कौन सा श्रावक श्वेताम्बर है, कौन दिगम्बर है, कौन तेरापंथी है, और कौन स्थानकवासी है...

यह बात सुन सभी साधु भगवंत विचार करने लगे...

जब उसको कोई जवाब नहीं मिला तो उस श्रावक का जवाब सुन सभी विचार करने को मजबूर हो गए...

उसने कहा आप जितने साधु बिराजे हो हमें पता है आप में से कौन से साधु श्वेताम्बर हैं, कौन दिगम्बर है, कौन से स्थानकवासी हैं, और कौन से तेरापंथी है...

श्रावक सभी एक ही है, फर्क तो आप सन्तों में ही दिखता है।

(कृपया इस पर गंभीरता से चिंतन करें)

द्वारा : ललित कुमार नाहटा

वीर वही जो बंधन-मुक्त करे

○ संघ प्रवर्तिनी साध्वी मंजुलाश्री

धर्म के नाम पर नाना पाखंड और थोथे क्रियाकांडों का बोलवाला था। अपनी-अपनी मान्यताओं को सही बताने में सभी सम्प्रदाय अहं भूमिका निभा रहे थे। धर्म नाम पर यज्ञ हिंसा धन संग्रह और अबोध लोगों की श्रद्धा का सरेआम शोषण हो रहा था।

जातिवाद आदि तत्कालीन समाज की कुत्सित परिस्थितियों, राजनीति के चक्रव्यूह और धर्म क्षेत्र की बिडम्बनाओं ने राजकुमार वर्धमान के भावुक मन को झकझोर दिया। वे इन मानवता घाती दमन चक्रों और समाज के कलंकों को जड़ से उखाड़ना चाहते थे। वे उन प्रचलित रीति-रिवाजों को नई दिशा देना चाहते थे। उसके लिए बहुत बड़े त्याग बाहरी जगत से हटाकर उन्हें भीतरी जगत में परिभाषित करना चाहते थे। उन्होंने वही किया। राजमहलों का शाहीशान शौकत का जीवन ठुकराया। मखमली गद्दों के स्थान पर कांटों भरी राहें चुनीं। त्याग, तपस्या और सत्य की साधना में सारा यौवन गाल दिया। संयम और तपस्या की अग्नि में तपकर जब वे कुन्दन बनकर निखरे तब उनकी हर क्रिया का अर्थ बदल गया। उनकी वाणी में सार्थकता आ गई। उन्होंने समाज में प्रचलित जातिवाद के कलंक को धोने के लिए हरिकेशी नाम के हरिजन पुत्र को अपने संघ में दीक्षित कर पूरे समाज का सम्माननीय और वन्दनीय बना दिया। दास प्रथा का उन्मूलन करने के लिए, दासी रूप में बिकी राजकन्या चन्दनबाला को दीक्षित कर अपने श्रमणी संघ की मुखिया बनाया। यज्ञ और हवन को नई व्याख्या प्रदान करते हुए आत्म यज्ञ की प्रेरणा दी। नरबली और पशुबली जैसे अन्ध विश्वासों को खत्म करने में भगवान महावीर को बड़ी शक्ति लगानी पड़ी। राजा महाराजों के युद्धोन्माद को भी एक नया मोड़ दिया। विजय और पराजय की परिभाषा ही बदल दी। किसी को हुकूमत

में लेने वाला, बंधन में बांधने वाला, औरों को अपने अधीन करने वाला वास्तव में विजयी नहीं वह कायर है। विजय का दंभ भरता है। सच्चा विजेता तो वह है जो औरों को बंधन मुक्त करता है। औरों की मूलों को, अपराधों को क्षमा प्रदान करता है। औरों पर विजय प्राप्त करने वाले पहले अपने पर विजयप्राप्त करना सीखें। लाखों योद्धाओं को पराजित करके भी व्यक्ति विजय का वह आनन्द नहीं पा सकता जो आत्म विजय से मिलता है। आत्म विजेता ही दुनिया का सबसे बड़ा विजेता है। असली शत्रु और मित्र की पहचान कराते हुए भगवान महावीर ने कहा- असली शत्रु और असली मित्र व्यक्ति की अपनी आत्मा ही है। जो आत्मा दुष्कर्म में प्रवृत्त है वह व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन है। जो आत्मा सत्कर्म में प्रवृत्त है, वह व्यक्ति का अपना सच्चा मित्र है।

फिर व्यर्थ में ही किसी को शत्रु समझ कर उस पर चढ़ाई करना, उसका राज्य हड़पना, उसको अधीन बनाना, वह साम्राज्यलिप्सु व्यक्ति का उन्याद है। सबको जीने का अधिकार है। किसी की भी जीवन सत्ता को बाधित करना अपने आपको जीवन से वंचित करना है।

सदोष और त्रुटिपूर्ण दंड प्रणाली को चुनौती देते हुए भगवान महावीर ने कहा जहां अपराधी सर्वथा मुक्त हो जाए और निर्दोष व्यक्ति दंडित किया जाए, वह कैसा न्याय? असली न्याय तो प्रभु के घर होना है। जहां दूध का दूध और पानी का पानी होता है।

धर्म जगत की जड़ता दूर कर करने के लिए भगवान महावीर ने एक अद्‌भुत रोशनी दी। उन्होंने कहा- धर्म-साधना आत्मा की भाव भूमि है। उसकी क्रियान्विति के लिए न मंदिर जरूरी है, न जंगल और गुफाएं। धर्म का सम्बंध न बाल्यावस्था से है, न वृद्धावस्था से। धर्म की शरणागति में किसी व्यक्ति को गुरु बनाना भी जरूरी नहीं है। भगवान महावीर ने किसी को अपना गुरु नहीं बनाया। न माता-पिता द्वारा गृहीत-धर्म की परंपरा में ही चले। अपने से धर्म का रास्ता खोजा। धर्म तो नितान्त व्यक्तिगत अनुभूति है। धर्म के बीच गुरुडम आते ही धर्म पर सम्प्रदाय

हावी हो जाता है। गुरु तो रास्ता वही दिखाएगा जो उसके गुरुडम को मजबूत करेगा। भगवान महावीर को कोई चिन्ता नहीं थी कि उनके पंथ का नाम क्या हो। उनका पंथ कितना चलेगा। उनकी संघ परंपरा कितनी दीर्घजीवी होगी। उनकी वाणी, उनके शास्त्र मात्र शुद्ध धर्म की प्रेरणा देते हैं। उनकी सोच थी कि धर्म और गुरु कभी बंधन में डालने के लिए नहीं होते। वे तो समाज को बंधन से मुक्त करने के लिए लेते हैं। मन की मलिनता को धोकर, कषाय का शोधन करने वाला ही धर्म है। धर्म में न आडम्बर होता है न दिखावा और बाह्याचार। न उसका बंधा बंधाया समय होता है। वह तो दिन रात सुप्तावस्था में जागृतावस्था में एक समान चित्त को पावन बनाए रखता है। उसी धर्म से आत्मा का उत्तरोत्तर विकास होगा। अनंत अनंत जन्मों के कर्म बंधनों से आत्मा की विमुक्ति होगी। अपना कल्याण व्यक्ति खुद ही करता है। किसी का कल्याण किसी के द्वारा नहीं होता। न किसी को मानने से किसी की मुक्ति होती है। न कोई खिताब पाने से या किसी का लेबिल लगाने से मुक्ति का सर्टिफिकेट मिलता है। नथर्म पैसे से ही खरीदा जा सकता है। अगर अपनी आत्मा से धर्म किया जाएगा तो ही मुक्ति का आनन्द मिलेगा। शांति का साम्राज्य फैलेगा।

भगवान महावीर द्वारा प्रणीत धर्म की इन शुद्ध और बेलाग व्याख्याओं ने धर्म जगत में हलचल पैदा कर दी। पाखंडियों की पोप लीलाएं चरमराने लगी। भगवान महावीर की धर्म क्रांति से अकारण भगवान, महावीर के विरोधी बन गए, लेकिन वर्धमान ने सत्य के मार्ग में कभी समझौता करना नहीं सीखा। उनका अनेकान्त दर्शन भी समझौता नहीं, सैद्धान्तिक सचाई है। अहिंसा ओर अपरिग्रह की सीमाएं भी समझौता नहीं शक्यता या सामर्थ्य अनुसार दिशा-निर्देश है।

धर्म जगत के आदित्य भगवान महावीर ने विश्व को जो देन दी है, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक चेतना को जिस ढंग से उजागर किया है, उसका पूरी मानव जाति पर एक बहुत बड़ा ऋण है। उनकी अकारण-वत्सलता का सच्चा मूल्यांकन तभी होगा जब उनके दिखाए गए मार्ग का अनुसरण करते हुए धर्मान्ध लोगों की आंखें खोली जाएंगी। आज के युग संदर्भ में निःशस्त्री करण, धर्म निरपेक्षता, सर्वधर्म सहिष्णुता आदि भगवान महावीर के उपदेशों का पर्याप्त महत्त्व है। आज से छबवीस सौ वर्ष पूर्व एक ज्योति भारत के अंचल से उठकर पूरे ब्रह्माण्ड में फैल गई और छोड़ गई पीछे प्रेरणाओं के अनन्त-अनन्त स्रोत। ◆◆

भगवान श्री महावीर के प्रति

करूणा के अवतार दया के सागर श्री महावीर
जगत की हरने आए पीर
छेड़ा नव संग्राम हाथ में लिए अहिंसा तीर
जगत की हरने आए पीर।।

आत्म विजय का पथ दिखलाया सबको नई दिशा दी
ठुकरा राज सिंहासन राजतंत्र की जड़ें हिला दी
ऐसे वीर धीर योद्धा की अद्‌भुत थी तस्वीर। (1)

विश्व मैत्री का सबक सिखाया, अपने ही जीवन से
जीव मात्र पर समता रस बरसाया था कण-कण से
पशुबलि दासप्रथा की तोड़ी प्रभुवर ने जंजीर। (2)

जातिपंथ का भेद मिटाकर व्यापक धर्म बताया
हिंसा आडम्बर मिथ्याचारों को दूर भगाया
धर्मद्वार सबके खातिर है कौन गरीब अमीर। (3)

पर्यावरण-शुद्धि आतंकवाद से हो छुटकारा
महावीर के सिद्धांतों का यदि ले विश्व सहारा
वैर विरोध मिटे आपस का पग-पग शांति समीर। (4)

उपकारों से उऋण होना प्रभु आसान नहीं है
पूजा अभिवादन कैसे कर पाएं ज्ञान नहीं है
तन मन प्रभु पथ पर अर्पित बरसादो करूणा नीर। (5)

महासती मंजुलाश्री जी

तर्ज-गगन जमीं

ओम् वर्ण-विकार

○ साध्वी मंजुश्री

अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और मुनि इस पंच परमेष्ठि का स्वरूप ओम्मय है। ओम् की साधना पंचपरमेष्ठि की तरह है। इसकी साधना करते हुए भी वर्णों की वही कल्पना की गयी है- जो परमेष्ठि महामन्त्र में की गयी है। 'ओम्' परमेष्ठि का वाचक एकाक्षरी मन्त्र है। यह अपनी सुगमता के कारण ही सार्वदेशिक, सार्वकालिक बन विद्यमान है। स्वरूप उच्चारण आकार और प्रकार की लघुता की वजह से जपमन्त्र बना और सांस-सांस में सभी धमास्तिकों में समा गया या समा सकने में सक्षम हो पाया। वैसे तो समग्र परमेष्ठि महामन्त्र की व्याख्या का यह सूत्र वाक्य है। इसीलिए श्वास लेते ओर श्वास छोड़ते समय ध्वनि तरंगों में घुलमिल जाने वाला सूत्र मन्त्र बन गया। श्वासों के ग्रहण और श्वासों के विसर्जन में इसकी ध्वनि तरंगें सहस्रार को छूकर प्रतिध्वनित होती हैं।

हेमचन्द्र आचार्य ने योगशास्त्र में कहा है-

आपके हृदय कमल में ओंकार स्थित है, बीज स्वर सहित व्यंजन परमेष्ठि परमपद का वाचक है। मस्तिष्क में स्थित सहस्रार चन्द्रकला के रस से झरता सुधायुक्त महामंत्र ओंकार है। इसका कुम्भक (श्वासोच्छ्वास रोकना) द्वारा चिन्तन करना चाहिए। ओंकार अपूर्व शक्ति का केन्द्र है। योगीजन इसीलिए इसका जप और ध्यान करते हैं। इससे भौतिक-आध्यात्मिक सिद्धि प्राप्त होती है।

चुटकुले

1. सोनू- तूने कभी इंग्लिश में पढ़ाई क्यों नहीं की?
मोनू- विद्यालय में जब पहली बार पता चला कि साइकोलॉजी की स्पेलिंग सा या एस से नहीं, बल्कि पी से शुरू होती है, कसम से अंग्रेजी से भरोसा तो उसी दिन उठ गया।

2. टी.वी. रिपोर्टर ने एक जख्मी आदमी से पूछा- 'बम गिरते ही फट गया था या...?'
जख्मी आदमी बोला- नहीं साब, वह लुढकता हुआ मेरे पास आया और शरमा कर बोला, फुस्स।'

3. शिक्षक (छात्र से) नेपोलियन की मृत्यु किस लड़ाई में हुई?
छात्र- महोदय, उसकी आखिरी लड़ाई में।

4. लड़की (लड़के से) मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूं। मैं तुमसे शादी करना चाहती हूं।
लड़का- लड़की के सर पर दुपट्टा रखते हुए हाथ पकड़ता है और कहता है, सॉरी रोज सुबह-शाम मंदिर जाकर भक्ति करो।

5. सास ने फ्रिज खोला, अंदर देखकर चकराई और पूछा, ये मंदिर का घंटा फ्रिज में क्यों रखा है?
नई बहू का जवाब था, रेसिपी बुक में लिखा है कि सब चीजों का मिश्रण कर लें और एक घंटा फ्रिज में रखें।

-प्रस्तुति : सुपारस

कविता

आस्था की इन गायों को
किसी खूंटे से मत बांधो तुम,
भटकने दो इन्हें बीहड़ की टेढी-मेढी
पगडंडियों में
चरने दो इन्हें
खुले चारागाहों में
सांझ होते-होते
ये स्वयं ले लेंगी घर का रास्ता।

-आचार्यश्री रूपचन्द्र

राजा जो कंचे खेलता था

छोटा राज्य अंधेरे में डूब गया। वहां न कोई मौजमस्ती थी, न संगीत और न हंसी की आवाज। लोगों के चेहरे उतरे हुए थे। महल में दीये धीमी लौ में जल रहे थे।

युवा शासक के शयनकक्ष के दरवाजे पर पर्दा लटका हुआ था और बाहर महल के नौकर-चाकर दुखी बैठे हुए थे। कुछ धीमी आवाज में रो रहे थे।

राजा बीमार था। उसका अंतिम समय नजदीक था। हफ्ता भर पहले अचानक किसी रोग ने राजा को आ घेरा था। प्रधानमंत्री के बुलावे पर आए दूर-दूर के वैद्यों-हकीमों ने जवाब दे दिया कि राजा की बीमारी का उनके पास कोई इलाज नहीं है। उन सबने मिलकर हर कोशिश की, लेकिन मौत पर किसी का वश नहीं था।

रानी बिस्तर के सिरहाने बैठी हुई थी। राजकुमार, जो अभी नौ साल का भी नहीं था, रानी मां के पास बैठा हुआ था। राजकुमार समझ नहीं पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा है। रानी बहुत दुखी थी और रो रही थी।

जब रानी ने देखा कि उसके पति के होंठ कुछ कहने के लिए हिल रहे हैं तो वह बात सुनने के लिए नीचे झुकी। लेकिन राजा की आवाज गले से नहीं निकली। राजा ने विदा लेती आंखों से उन्हें देखा। उसके हाथ हिले। रानी ने धीरे से बेटे के हाथ पति के हाथों में दे दिए।

राजा ने बेटे के हाथों को एक पल के लिए थामा और उसके बाद उसकी मृत्यु हो गई।

उसके बाद हर तरफ रोने की आवाजें सुनाई देने लगीं। छोटा बालक बैठा-बैठा चारों तरफ देखने लगा। जब उसने क्रंदन सुना तो उसने अपनी मां की तरफ देखा और उसे भी रोता हुआ पाया। वह बच्चों की तरह सुबक रही थी। यह देखकर बेटा भी रोने लगा- इसलिए नहीं कि उसके पिता चल बसे थे, बल्कि इसलिए क्योंकि उसकी मां रो रही थी। बाहर से जोर-जोर से रोने

की आवाजें आ रही थीं। एक-एक करके महल के सभी लोग उस कमरे में जमा होने लगे।

राजा की मृत्यु के बाद उसके नौ साल के बेटे को नया शासक बना दिया गया। कुछ हफ्ते बीतने के बाद महल और बाहर राज्य में, जीवन पहले जैसा सामान्य हो गया।

नौ साल का नन्हा बालक राजा बनने का मतलब नहीं जानता था। सिर पर मुकुट उसे भारी लगता था और कीमती कपड़े और जेवर गरम व तकलीफदेह जान पड़ते थे। वह उनसे नफरत करता था। लेकिन बच्चों को बड़ो की आज्ञा तो माननी ही पड़ती है।

नेक दिल प्रधानमंत्री को महत्व मिला और वह और अधिक व्यस्त रहने लगा। उसने रानी से कहा कि वह नन्हे राजा की पूरी तरह से मदद करेगा। उसका मार्गदर्शन करने में, उसे शिक्षा देने में और उसे एक अच्छा शासक व आदर्श राजा बनाने में भरपूर कोशिश करेगा। रानी मां चुप रही। वह बेटे को महल के अंदर घूमते-फिरते देखती रहती। उसे मनचाहा कुछ भी करने देती। टोका-टोकी बिल्कुल न करती।

प्रधानमंत्री ने नन्हे राजा के नाम पर शासन की बागडोर संभाली तो वह बहुत शक्तिशाली बन गया। वह पितृविहीन बालक के अभिभावक के रूप में स्वयं को राज्य का एक सेवक समझता था। उसके अंदर बालक को एक आदर्श राजा बनाने का उत्साह था जैसे कि बालक के पिता और दादा थे। लगता था जैसे वह इसी लक्ष्य को पूरा करने के लिए जी रहा हो।

लड़के को खेलने-कूदने में मजा आता था। और कंचे खेलना तो उसे सबसे अच्छा लगता था।

उसे कंचों से बहुत प्यार था। वह उन्हें जहां-तहां से इकट्ठा करता रहता था। उसकी जेबें कंचों से भरी रहती थीं। यहां तक कि सोने चांदी और हाथी दांत की पेटियां व संदूकचियां भी कंचों से भरी थीं, जो उसे धनी लोगों से विशेष अवसरों पर उपहार के रूप में मिली थीं। पूरे महल में मेजों की दराजों में और गलियारों में टंगे पूर्वजों के राजसी चित्रों के पीछे भी कंचे रखे रहते। सभागारों में विभिन्न मुद्राओं में खड़ी मूर्तियों के पीछे भी कंचे पड़े रहते थे।

उसके पास हर युग, आकार व रंग के कंचे थे। वह उन्हें छिपाने वाली जगह से बाहर निकालता और अपने हाथों में रखता। वह कंचों को अपने हाथों में इधर-उधर हिलाकर देखता। कितने भव्य थे वे! फिर उन्हें लुढ़काने से उत्पन्न हुई खनखनाहट का संगीत सुनकर रोमांचित हो उठता। इधर-उधर चलते हुए वह उनकी खनखनाहट से खुश होता था। प्रायः भागते-भागते वह सिर्फ कंचों की आवाज सुनकर एकाएक रुक जाया करता था।

उसने बहुत जल्दी ही उन्हें छिपाने की जगहें ढूंढ ली थीं- पुराने अलंकृत पलंग के फ्रेम के नीचे, भारी पर्दों के पीछे, आड़ और कोनों में या फिर और जो भी जगह मिले, जहां प्रधानमंत्री के उन्नति, शासनकला और सरकार के बारे में दिए जाने वाले उपदशों और भाषणों से बचा जा सके। प्रधानमंत्री हमेशा इस मौके की तलाश में रहता था जब वह अपनी अंतहीन शिक्षाओं से राजकुमार के बाल-मन को प्रशिक्षित कर सके। लेकिन राजकुमार बहुत तेज था और उसने प्रधानमंत्री के भारी पदचाप सुनकर या उसे देखकर रफुचक्कर हो जाना सीख लिया था। और जहां भी, जब भी कभी संभव होता, वह कंचों से खेलने लगता। इतना प्यार था उसे कंचों से! मन ही मन वह उनसे बातें करता और उनके जवाब भी सुनता था। रात में वह उन्हें सपनों में देखता था।

प्रधानमंत्री चिंतित था। लड़का जीवन की सच्चाइयों को नहीं समझ रहा था। ऐसा लगता था, जैसे वह समझना ही न चाहता हो कि वह कोई साधारण बालक नहीं, बल्कि एक राजा है जिसे राज्य के कामकाज को देखना चाहिए। उसकी इस बात में भी कोई रुचि नहीं थी कि प्रधानमंत्री उसे पालने-पोसने और राजा की तरह पढ़ाने में कितनी तकलीफें उठा रहा है। मन ही मन प्रधानमंत्री इस बात से डरता था कि इस तरह से तो वह कभी भी इतिहास का महान प्रशासक और बुद्धिमान संरक्षक नहीं बन पाएगा, जिसके मार्गदर्शन ने युवराज को बनाया-संवारा।

वह राजसी परिवार का समर्पित सेवक था। वह अक्सर रानी के पास आता और लड़के पर और कड़े नियंत्रण की जरूरत की बात कह कर अपनी ईमानदारी निभाता था। ''वह सारा दिन खेलता है,'' वह शिकायत करता। ''वह अपनी जिम्मेदारियों को महसूस नहीं करता।' वह बोलता ही रहता, ''जीवन में उसका कोई उद्देश्य नहीं है।''

रानी उसकी बातों को सुनती, अपना सिर हिलाती और कहती, ''शायद हमें उसे अकेला छोड़ देना चाहिए और खेलने देना चाहिए। वह अभी बच्चा है। थोड़ा बड़ा होगा तो खुद बदल जायेगा।''

लेकिन प्रधानमंत्री अपने विचारों में इतना डूबा रहता कि उसे रानी की बातें शायद ही सुनाई देतीं।

एक दिन उसने नन्हे राजा को आ घेरा और सख्ती, दयालुता, चतुराई और समझाने-बुझाने के मिले-जुले भाव से बात की।

''तुम्हें गंभीर होना चाहिए,'' उसने कहा। ''एक राजा के लिए यह जरूरी है कि वह अपनी प्रजा की ओर ध्यान दे।''

क्या उसके स्वर में एक छिपी हुई धमकी

और चेतावनी भी थी? लड़के के होंठ कांपने लगे। वह लड़खड़ाते हुए शब्दों में बोला- 'मैं वही करूंगा जो आप कहेंगे... सचमुच वैसा ही करूंगा... लेकिन मैं चाहता हूं कि कोई मेरे साथ खेले... मैं कंचे खेलना चाहता हूं।''

प्रधानमंत्री का दिल खुशी से उछल पड़ा। यही एक रास्ता है बच्चे में बदलाव लाने और उसके अपरिपक्व और कोमल दिमाग पर प्रभाव डालने का।

''तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? उसने कहा। ''तुम्हारी ही उम्र का मेरा एक भतीजा है। मैं उसे महल में ला सकता हूं और तुम दोनों साथ में खेल सकते हो। उसे भी कंचे पसंद हैं और उसके पास उनका संग्रह भी है, हालांकि उतना बड़ा नहीं जितना कि तुम्हारे पास है। मुझे विश्वास है कि तुम्हें उसका साथ अच्छा लगेगा और तुम उसे अपना मित्र बनाना पसंद करोगे।'

नन्हा राजा उस लड़के से मिलने की उम्मीद में खुशी से उछल पड़ा, जो कंचे खेल सकता है और जिसके पास कंचों का अपना संग्रह है।

''वह कब आयेगा?''

''उसका नाम क्या है?''

''क्या वह मुझसे लंबा है?''

''क्या वह महल में कुछ समय के लिए ठहर सकता है?''

उसकी आखें चमक उठी थीं। उसने जल्दी-जल्दी कई प्रश्न कर डाले। प्रधानमंत्री खुश हो गया। इस नई दोस्ती और विश्वास में उसे आशा की एक किरण दिखाई दी। अब वह इस अवसर का उपयोग करेगा और इसे एक योग्य शासक बनने के लिए प्रशिक्षित करेगा।

उसका भतीजा आया। लड़कों में दोस्ती हो गई। वे महल में चारों तरफ दौड़ते-भागते, बातें करते और अपने क्रियाकलापों की चर्चा करते थे। और हां, खूब कंचे खेलते थे। अब नन्हे राजा के पास कोई था जिससे वह अपने मन की बात कह सकता था।

उन्होंने एक दूसरे के कंचों को देखा, परखा और उनकी कमियां बताईं। उन्होंने अपने कंचों को लुढ़काया और उनके बदलते हुए रंगों को देखकर खूब खुश हुए।

नन्हे राजा ने एक बड़े और लाल रंग के मोटे कंचे को अपने अंगूठे और उंगलियों के बीच पकड़कर कहा- ''यह अद्‌भुत है।'' ''मैंन ऐसा कंचा कहले कभी नहीं देखा। यह सभी कंचों से बड़ा है।'' दूसरे लड़के ने जवाब दिया। ''तुम्हें यह कहां से मिला?'' ''याद नहीं, ''नन्हे राजाा ने कहा। ''इससे क्या फर्क पड़ता है। हमें बातों में अपना समय खराब नहीं करना चाहिए। आओ खेलें।''

उसने अपनी उंगलियां से एक झटके के साथ कंचे को चमचमाते फर्श पर इस तरह

से फेंका कि वह चक्कर खाता हुआ उछलने लगा।

''सुंदर निशाना,'' प्रधानमंत्री का भतीजा चिल्लाया। ''यह बहुत बढ़िया था।'' और उसने राजा के इस प्रयास का जवाब अपने चमकदार नीले और पीले कंचे से दिया।

लेकिन जिस समय ये दोनों बच्चे खेल रहे थे, तब बाहर बड़े लोगों की दुनिया में कुछ और ही घट रहा था। पड़ोसी राज्य मवाना का शासक और उसके मंत्री नन्हे राजा के राज्य की ओर कूच करने की योजना बना रहे थे। लड़के के पिता के मरने की खबर उन तक पहुंच गई थी ओर उन्हें छोटे राज्य पर आक्रमण करने के लिए यह समय एकदम सही लग रहा था। उन्होंने महसूस किया कि वह राज्य आंतरिक कलह से कमजोर हो चुका होगा, इसलिए उसे हराना बहुत ही आसान है।

इसलिए सभाएं हो रही थीं, विवरणों पर विस्तार से सोचा जा रहा था, परिणामों पर विचार किया जा रहा था, अंत में यह निश्चय किया गया कि मवाना की सेना पड़ोसी राज्य की तरफ कूच करके उसे अपने राज्य में मिला ले। वह राज्य मवाना के अधीन कर लिया जायेगा और मवाना के राजा द्वारा शासित होगा।

एक बार यह निर्णय हो जाने के बाद सब कुछ तेजी से घटने लगा। नक्शे देखे जाने लगे, सेना कुशलता से अपने कार्य में जुट गई, आक्रमण के बारे में विस्तार से बातचीत होने लगी।

आपातकाल घोषित कर दिया गया। लड़ाई की रिहर्सल की जाने लगी और हर तरफ जोश की लहर दौड़ गई।

निश्चित दिन अपने पीछे धूल के बादल उड़ाते हुए एकाएक हजारों घुड़सवार सिपाही अपनी तलवारों को धूप में चमकाते हुए प्रकट हो गए। प्रतीक-चिह्नों वाले झंडे हवा में फहरा रहे थे। घुड़सवारों के पीछे सैकड़ों हाथी चिंघाड़ते हुए अपने महावतों के साथ आ रहे थे। उनके पीछे पैदल सेना थी। उनकी रण ललकारें हवा को चीर रही थीं। वे अपने अस्त्रों-शस्त्रों को लहराते हुए जीत के लिए आगे बढ़ रहे थे। उनके भारी कदमों की आवाज से धरती कांप रही थी। आकाश काला लग रहा था, जैसे मौत साक्षात सामने आ खड़ी हो।

पक्षी भांति-भांति की आवाजें निकालते हुए उड़ गये। जानवरों में भगदड़ मच गई। पेड़ जैसे अपनी सांस रोके चुपचाप खडे हों और घास की पत्तियां सहमकर एक दूसरे से सट गईं।

ऐसा था मानव निर्मित आंधी का प्रकोप!

लेकिन नन्हे राजा के राज्य में जीवन मजे में चल रहा था क्योंकि कोई भी मवाना की कायरतापूर्ण योजना और चालों को नहीं जानता था। कंचों का खेल बड़े केंद्रीय सभागार में चलता रहा। रसोईघरों में खाना

हमेशा की तरह बन रहा था। महल के बाहर दिन भर काम से थके हुए आदमी चाय की चुस्कियां ले रहे थे और औरतें अपने घरों की दहलीज पर बैठकर सिलाई-बुनाई करते हुए आपस में गपशप कर रही थीं। बच्चे हमेशा की तरह स्कूल से लौटने के बाद चीखते-चिल्लाते, हंसते और भिन्न-भिन्न तरह की आवाजें निकालते हुए इधर-उधर भाग रहे थे।

एक मां अपने बच्चे को सुलाने के लिए थपकियां देते हुए गुनगुना रही थी। सूरज डूबने के साथ घरों में दीए जलने शुरू हो गये।

एक शव को 'राम नाम सत्य है' शब्दों का उच्चारण करते हुए श्मशान घाट ले जाया जा रहा था। सभी अपने दैनिक कार्यों में व्यस्त थे, क्योंकि उन्हें नहीं मालूम था कि क्या होने वाला है। -क्रमशः

गजल

-महेन्द्र जैन

गम छिपा कर हमें मुस्कराना पड़ा
इक मुखौटा नया फिर लगाना पड़ा

आत्मविश्वास मन में रहा जब तलक
हर मुसीबत को ही लौट जाना पड़ा

मुस्कराते रहें गुल चमन में मेरे
इसलिए खार से भी निभाना पड़ा

जान-ए-मन आपकी ही खुशी के लिए
मुझको गैरों की महफिल में गाना पड़ा

दर्द अपना समझकर सुनाया तुम्हें
यूं तो कहने को सारा जमाना पड़ा

रूठकर मुझसे ज्यों ही वो चलने लगे
मिन्नतें लाख करके मनाना पड़ा

नचिकेता की कथा

गौतम वंश में उत्पन्न हुए एक महात्मा बाजश्रवा बहुत दानी व्यक्ति थे। उन्होंने दान करके बहुत यश प्राप्त किया था, इसलिए उनका नाम बाजश्रवा पड़ गया था। बाज का अर्थ होता है- अन्न और श्रव का अर्थ है, उसके दान से प्राप्त यश। बाजश्रवा के पुत्र हुए महर्षि अरुणि ओर महर्षि अरुणि के पुत्र हुए उद्दालक ऋषि। जब उद्दालक वृद्धावस्था में पहुंचे तो उनके मन में यह विचार पैदा हुआ कि क्यों न आगामी जीवन सुधारने के लिए किसी यज्ञ का आयोजन किया जाए। ऐसा विचार कर उन्होंने 'विश्वजित' नामक यज्ञ करने का निश्चय किया। इस यज्ञ में अपना सर्वस्व दान करना पड़ता है।

उन दिनों गोधन ही प्रधान था। उद्दालक के घर में गोधन की ही अधिकता थी। उन्होंने यज्ञ के उपरांत अपना सारा धन यज्ञ के प्रमुख कर्त्ताओं और सदस्यों को दान कर दिया।

उद्दालक ऋषि के पुत्र का नाम था नचिकेता। नियमानुसार दक्षिणा में दान करने के लिए जब गाएं लाई जा रही थीं तो बालक नचिकेता ने उन्हें देखा। गाएं बहुत ही दुर्बल और दयनीय दशा में थीं। बालक नचिकेता का हृदय बहुत ही कोमल और भावुक था। गायों की दयनीय दशा देखकर वह आकुल हो उठा। वह विचार करने लगा, 'पिताश्री ये कैसी गाय दक्षिणा में दे रहे हैं? अब इनमें न तो झुककर जल पीने की शक्ति रही है, न ही इनके मुख में घास चबाने के लिए दांत रह गए हैं। इनके थनों में तनिक-सा दूध भी शेष नहीं बचा, और तो और ये गाएं गर्भधारण के योग्य भी नहीं रहीं हैं। भला ऐसी बेकार और मृत्यु के निकट पहुंची गाएं जिन ब्राह्मणों के घर जाएंगी, उनको दुःख के सिवाय और क्या देंगी? दान तो उसी वस्तु का करना चाहिए, जो अपने को सुख देने वाली हो, प्रिय हो, उपयोगी हो तथा वह जिसको दी जाए, उसे भी सुख और लाभ पहुंचाने वाली हो। दुःख देने वाली बेकार वस्तुओं को दान के नाम पर देना तो दान के बहाने अपनी मुसीबत टालना है, साथ ही यह दान लेने वालों के

प्रति एक प्रकार का धोखा ही है। इस प्रकार के दान से पिताश्री को क्या सुख और क्या फल मिलेगा? पिताश्री ने तो सर्वस्व दान करने वाला यज्ञ किया है, फिर मेरे नाम पर उपयोगी गाएं क्यों रख ली हैं? क्या सर्वस्व में वे गाएं नहीं हैं? और मैं भी तो सर्वस्व में ही हूं, मुझको तो इन्होंने दान में दिया ही नहीं। यह कैसा सर्वस्व दान है? मैं अपने पिता का प्यारा पुत्र हूं, इसलिए मैं अपने पिता को इस अन्यायपूर्ण काम से और इसके बुरे परिणाम से बचाने के लिए अपना बलिदान दूंगा। यही मेरा धर्म है।' ऐसा निश्चय करके नचिकेता ने अपने पिता से कहा, 'पिताश्री! मैं भी तो आपका धन हूं, आप मुझे किसको देंगे?'

नचिकेता के इस प्रश्न की उद्दालक ने उपेक्षा कर दी, उन्होंने कोई उत्तर नहीं दिया। पुत्र का कर्त्तव्य जानने वाले नचिकेता से रहा नहीं गया, उसने दूसरी बार फिर अपने पिता से यही प्रश्न किया। जब दूसरी बार भी उसके पिता ने कोई उत्तर नहीं दिया तो नचिकेता ने तीसरी बार फिर से यही प्रश्न कर दिया। बार-बार के प्रश्न करने से उद्दालक ऋषि को क्रोध आ गया। उन्होंने आवेश में आकर कहा- 'मैं तुझे यम को दूंगा।'

पिता के ये वचन सुनकर नचिकेता मन-ही-मन विचार करने लगा, 'आखिर पिताश्री ने इतनी कठोर बात कैसे कह दी? जितना आज तक मैं जान पाया हूं, उसके अनुसार शिष्यों और पुत्रों की तीन श्रेणियां होती हैं- उत्तम, मध्यम एवं अधम। जो गुरु अथवा पिता की इच्छा को समझकर उनकी आज्ञा की प्रतीक्षा किए बिना ही उनकी रुचि के अनुसार कार्य करने लगते हैं, वे उत्तम हैं। जो आज्ञा पाने पर कार्य करते हैं, वे मध्यम हैं और जो इच्छा जान लेने एवं स्पष्ट आदेश सुन लेने के पश्चात् भी उसके अनुसार कार्य नहीं करते, वे अधम हैं। मैं बहुत से शिष्यों में तो प्रथम श्रेणी का हूं और कुछ में मध्यम श्रेणी का, किंतु अधम श्रेणी का तो किसी भी दशा में नहीं हूं। आज्ञा मिले और सेवा न करूं, ऐसा तो मैंने कभी किया ही नहीं, फिर पता नहीं पिताजी ने मेरे लिए ऐसी बात कैसे कह दी। यमराज का भी ऐसा कौन-सा काम अटका होगा, जिसे पिताश्री आज मुझे उन्हें देकर पूरा कराना चाहते हैं? हो सकता है पिताजी ने यह बात क्रोध में आकर वैसे ही कह दी हो। जो कुछ भी हो, पिताश्री का वचन तो सत्य करना ही चाहिए।'

इधर तो नचिकेता इस प्रकार से सोच रहा था, उधर उसके पिता एकांत में बैठे शांतिपूर्वक चिंतन में लीन थे। नचिकेता को पिता का एकांत में बैठना अच्छा न लगा। उसने विचार किया कि शायद पिताश्री अपने वचनों पर पश्चाताप कर रहे हैं। वह उठा ओर पिता के पास जाकर उन्हें धैर्य

दिलाता हुआ कहने लगा, 'पिताश्री! अपने पूर्वजों के आचरण की ओर देखिए और वर्तमान दूसरे श्रेष्ठ पुरुषों के आचरण को देखिए। उनके चरित्र में न पहले कभी असत्य था और न अब है। जो साधु पुरुष नहीं हैं, वे ही असत्य आचरण करते हैं, परंतु उस असत्य से कोई अजर-अमर नहीं हो जाता। मनुष्य तो एक दिन मरता ही है। वह अंत की भांति जराजीर्ण होकर मर जाता है और अंत की भांति ही पुनः समय पाकर जन्म ले लेता है। ऐसी दशा में इस नश्वर जीवन के लिए मनुष्य को कभी कर्त्तव्य का त्याग करके मिथ्या आचरण नहीं करना चाहिए। आप चिंता का त्याग कर दें और अपने वचनों को सत्य करने के लिए मुझे यमराज के पास जाने की आज्ञा दें।'

पुत्र के अनुसार उद्दालक महर्षि को हर्ष भी हुआ और शोक भी। अंत में नचिकेता के सत्य पालन के प्रति दृढ़ता देखकर उन्होंने उसे यमराज के पास भेज दिया।

यमलोक जाकर नचिकेता को पता चला कि यमराज कहीं बाहर गए हुए हैं और तीन दिन बाद लौटेंगे। नचिकेता तीन दिन तक अन्न-जल ग्रहण किए बिना ही उनकी प्रतीक्षा करता रहा। तीन दिन बाद जब यमराज लौटे तो उनकी पत्नी ने उनसे कहा- 'हे सूर्यपुत्र! हमारा कोई पुण्य उदय हुआ है जो साधु-हृदय अतिथि हम गृहस्थ के घर पधारे हैं। ऋषि-पुत्र बालक नचिकेता तीन दिन से बिना अन्न-जल ग्रहण किए आपकी प्रतीक्षा कर रहा है। आप तुरंत उसके पैर धोने के लिए जल ले आइए और अतिथि की सेवा कर उसे प्रसन्न तथा संतुष्ट कर दीजिए। अतिथि का घर पर भूखे लेटे रहना हमारे लिए आपत्ति का कारण हो सकता है।'

पत्नी के वचन सुनकर यमराज तुरंत नचिकेता के पास गए और उनके चरण धोकर उसे प्रणाम करते हुए बोले- 'हे बालक! तुम मेरे माननीय अतिथि हो। मेरा कर्त्तव्य था कि मैं यथायोग्य तुम्हारा पूजन आदि करके तुम्हें संतुष्ट करता, किंतु मेरे प्रमाद के कारण तुम तीन दिन से बिना कुछ ग्रहण किए भूखे बैठे मेरी प्रतीक्षा करते रहे हो। मुझसे यह बड़ा अपराध हो गया है, मुझे क्षमा कर दो और मेरे कल्याण के लिए उन तीन रात्रियों के लिए अपनी इच्छानुसार मुझसे तीन वर मांग लो।'

यमराज के ऐसा कहने पर नचिकेता ने उनसे कहा- 'हे मृत्यु देवता! तीन वरों में से मैं पहला वर यही मांगता हूं कि मेरे पिता, जो क्रोध के आवेश में आकर मुझे आपके पास भेजकर अब अशांत और दुखी हो रहे हैं, मेरे प्रति क्रोधरहित, शांत-चित्त और संतुष्ट हो जाएं और आपसे आज्ञा लेकर जब मैं घर जाऊं तब वे मुझे अपने पुत्र नचिकेता के रूप में पहचानकर पहले की तरह ही बड़े स्नेह से बातचीत करें।'

यमराज ने प्रसन्न होकर कहा- 'जैसा तुम चाहते हो, वैसा ही होगा। तुमको मृत्यु के मुख से छूटकर घर लौटा देखकर मेरी प्रेरणा से तुम्हारे पिता बड़े प्रसन्न होंगे। तुमको अपने पुत्र रूप में पहचानकर वे तुमसे वैसा ही प्रेम करेंगे, जैसा पहले करते थे। उनका दुःख और क्रोध भी शांत हो जाएगा। तुम्हें पाकर अब वे जीवन-भर सुख की नींद सोएंगे।'

नचिकेता ने दूसरा वरदान पाने के लिए यमराज की ओर जिज्ञासा भरी दृष्टि से देखा और कहा- 'मैं स्वर्ग के सुख और निर्भयता के बारे में जानता हूं, यह भी जानता हूं कि स्वर्ग में न तो किसी को बुढ़ापा सताता है और न ही मृत्युलोक की तरह वहां किसी की मृत्यु होती है। भूख-प्यास आदि भी वहां नहीं सताती। स्वर्ग में किसी प्रकार का भी शोक नहीं है, लेकिन यह स्वर्ग अग्नि-विज्ञान को जाने बिना प्राप्त नहीं होता। आप अग्नि-विज्ञान के ज्ञाता हैं और मेरी- आपमें तथा अग्नि-विज्ञान में श्रद्धा है। दूसरे वरदान में आप मुझे अग्नि-विद्या का उपदेश दीजिए।'

यमराज कहने लगे, 'नचिकेता! अग्नि विद्या बहुत ही गुप्त है। यह विद्वानों की हृदय-रूपी गुफा में छिपी रहती है। इसे इसके अधिकारी को ही बताना चाहिए। तुम इसके अधिकारी हो, अतः ध्यान लगाकर समझ लो।'

यह कहकर यमराज ने नचिकेता को अग्नि-विद्या का रहस्य समझाया। यह भी भली-भांति समझाया कि अग्नि के लिए कुंड निर्माण आदि में किस आकार की, कैसी और कितनी ईंटें चाहिए तथा अग्नि का चुनाव किस प्रकार किया जाना चाहिए।

इसके पश्चात् नचिकेता की बुद्धि परीक्षा के लिए यमराज ने उससे पूछा- 'तुमने जो कुछ समझा है, वह मुझे सुनाओ।' नचिकेता ने सब ज्यों-का-त्यों सुना दिया। यमराज नचिकेता की प्रतिभा और स्मरण शक्ति देखकर बहुत प्रसन्न हुए और बोले- 'तुम्हारी अद्भुत योग्यता देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है, इससे मैं एक और वर तुम्हारे मांगे बिना ही तुम्हें दे रहा हूं। वह यह है कि यह अग्नि, जिसका गुप्त रहस्य मैंने तुम्हें बताया है, तुम्हारे ही नाम से प्रसिद्ध होगी। मैं तुम्हें तुम्हारे देवत्व की सिद्धि के लिए यह अनेक रूपों वाली विधि व यज्ञ विज्ञान रूपी रत्नों की माला भी देता हूं, इसे स्वीकार करो।'

माला को सहर्ष स्वीकार करके नचिकेता ने तीसरा वर मांगा, 'भगवन्! कुछ लोग कहते हैं कि मृत्यु के बाद भी आत्मा का अस्तित्त्व रहता है और कुछ लोग कहते हैं कि नहीं रहता, इस बारे में आपका जो अनुभव हो, मुझे बताइए।'

-क्रमशः

मुंहासे का इलाज

युवावस्था में सभी लड़के-लड़कियों को मुंहासे होते हैं, कुछ लोगों को ज्यादा मुंहासे होते हैं और उनका चेहरा बिगड़ जाता है।

कुछ लोग मुंहासों को फोड़ देते हैं तो ये और ज्यादा खराब हो जाते हैं तथा त्वचा पर दाग छोड़ देते हैं। इनका सर्व प्रथम इलाज तो यह है कि इन्हें फोड़ें नहीं, अपने आप ठीक होने दें।

मुंहासे होने का कारण एक प्रकार का हारमोन है। महिलाओं में एंडोजेन नामक हारमोन होता है। जो बिसियस ग्रंथि को उत्तेजित करता है, यह ग्रंथि सेबम नामक तेल बनाती है, यही तेल मुंहासों का निर्माण करता है।

मुंहासों के विभिन्न प्रकार-

1.हैड्स- मुंहासों का मुख्य कारण है। यह दो प्रकार के हो सकते हैं ब्लैक हैड्स और व्हाइट हैड्स।

2. फुंसी- त्वचा के रंग से मिलता जुलता हल्का से उभरा हुआ भाग।

3. पकी हुई फुंसी- मवाद से भरा हुआ उभरा भाग।

4. सिस्ट- गाढ़े पदार्थ से भरा हुआ एक बड़ा गोल आकार का उभरा भाग।

5. निशान- उपर दी गई सभी चीजों के ठीक होने के बाद भी कई निशान छूट जाते हैं।

मुंहासे का प्राकृतिक उपचार-

1. दिन में तीन चार बार कच्चे लहसुन की पीठी बनाकार लगाने से मुंहासे कम हो जाते हैं और काले निशान तथा फुन्सियां मिटने मे सहायता मिलती है।

2. लहसुन की दो चार कली प्रति दिन खाएं इससे रक्त शुद्ध होता है।

3. नींबू का रस गुनगुने पानी में मिलाकर दिन में तीन बार मुंह धोएं।

4. मेंथी की पत्तियों का पेस्ट बनाकार प्रतिदिन चेहरे पर दस से पन्द्रह मिनट लगाएं।

5. नारियल का पानी पीएं।

6. लौंग और जीरे का लेप बनाकर चेहरे पर लगाएं।

7. चेहरे पर प्रतिदिन दो बार नहाने से पहले दस मिनट तक हल्दी का लेप लगाएं।

8. कब्ज न होने दे।

9. संतुलित आहार ग्रहण करें। तनाव से बचें।

10. प्रातः उषा-पान करें।

11. प्राणायाम का नियमित अभ्यास करें।

प्रस्तुति : योगी अरूण तिवारी

गुरुत्वाकर्षी लहरें : आइंस्टीन की विरासत

एल्बर्ट आइंस्टीन के सापेक्षता सिद्धांत की अंतिम भविष्यवाणी गुरूत्वाकर्षी लहरें हैं। गुरूत्वाकर्षी लहरों की पहली बार पहचान करने की घोषणा 11 फरवरी को एडवान्स्ड लेजर इंटरफेरोमीटर ग्रेविटेशनल-वेव ऑब्जरवेट्री (एलआईजीओ) ने की थी। एलआईजीओ के दो विशाल डिटेक्टर हैं। पहला डिटेक्टर लिविंगस्टोन, लुइसियाना में है और दूसरा हैनफोर्ड, वाशिंगटन में है। इस नई खोज ने भौतिकी में तीन मील के पत्थर स्थापित किए।

1. गुरूत्वाकर्षी लहरों की सीधी पहचान
2. बाइनेरी ब्लैक होल प्रणाली की पहली पहचान
3. आइंस्टीन के सिद्धांत द्वारा प्रतिपादित कि ब्लैकहोल पदार्थ हैं, उनके बारे में प्रत्यक्ष प्रमाण।

न्यूटन के भौतिक सिद्धांतों के अनुसार गुरूत्वाकर्षण एक ऐसा बल है, जो दो पदार्थों को एक-दूसरे की तरफ खींचता है। आइंस्टीन ने 1915 में सापेक्षता सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए गुरूत्वाकर्षण के बारे में एक नई अवधारणा पेश की थी। एलआईजीओ ने दो ब्लैकहोलों से गुरूत्वाकर्षी लहरों के संकेतों का पता लगाया था। यह लहरें प्रकाश गति से संबंधित हैं, जबकि गुरूत्वाकर्षण की न्यूटन अवधारणा अनन्त गति का प्रतिपादन करती है। गुरूत्वाकर्षी लहरों के संबंध में भारत का भी बहुत योगदान है। पिछले दो दशकों के दौरान भारतीय वैज्ञानिक समुदाय गुरूत्वाकर्षी लहरों पर काम कर रहा था। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गुरूत्वाकर्षी लहरों का पता लगाने वाले दल में शामिल भारतीय वैज्ञानिकों की प्रशंसा की है। उन्होंने इस संबंध में ट्वीट करते हुए कहा, गुरूत्वाकर्षी लहरों का पता लगाने वाला ऐतिहासिक कार्य ब्रह्मांड के बारे में हमारी समझ को बढ़ाएगा। मुझे आशा है कि इस दिशा में हम बड़ा योगदान करेंगे। इस खोज से गुरूत्वाकर्षी लहर खगोलशास्त्र के एक नए युग की शुरूआत हुई है और इससे हमें ब्रह्मांड के उत्पन्न होने संबंधी बुनियादी सवालों का हल मिल सकता है।

प्रस्तुति : विनोद कुमार

होली है: जरा सुनें क्या कहते हैं रंग

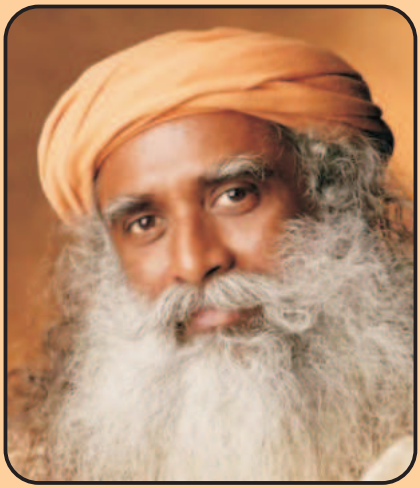

○ सद्गुरु जग्गीवसुदेव

होली का नाम सुनते ही तरह – तरह के रंग हमारे मन में घूमने लगते हैं। वैसे तो यह प्रेम, ताजगी और ऊर्जा का त्यौहार है, लेकिन होली की बात हो और रंगों की चर्चा न हो तो सब कुछ फीका-फीका सा लगेगा। आपसे हमने हाल ही में ये बात साझा की थी कि सभी रंगों का अपना एक अलग गुण, एक अलग स्वभाव होता है। तो आइए होली के अवसर पर आपका परिचय करवाते हैं कुछ और रंगों से :

<u>नीला रंग</u>

किसी इंसान में आने वाले आध्यात्मिक रूपांतरण के दौरान उसका आभामंडल, या उसके आस-पास मौजूद जीवन-ऊर्जा का घेरा, अलग-अलग रंग धारण कर सकता है। ऐसी बातों के प्रति संवेदनशील लोग जब करीब दो दशक पहले (यानी 1993 या 1994 में) मुझे देखते थे तो हमेशा कहते थे कि मुझे देखने से उन्हें नारंगी या गहरे गुलाबी रंग का अहसास होता है। लेकिन इन दिनों (2006 में) लोग हमेशा मेरे नीले होने की बात करते हैं। ये दो अलग-अलग पहलू हैं जिसे कोई इंसान अपनी इच्छा से धारण कर सकता है। अगर हम अपनी साधना में आज्ञा-चक्र को बहुत महत्वपूर्ण बना लेते हैं, तो नारंगी रंग प्रबल होगा। नारंगी रंग त्याग, संयम, तपस्या, साधुत्व और क्रिया का रंग है। और नीला रंग सबको समाहित करके चलने का रंग है। आप देखेंगे कि इस जगत में जो कोई भी चीज बेहद विशाल और आपकी समझ से परे है, उसका रंग आमतौर पर नीला है, चाहे वह आकाश हो या समुंदर। जो कुछ भी आपकी समझ से बड़ा है, वह नीला होगा, क्योंकि नीला रंग सब को शामिल करने का आधार है।

आपको पता ही है कि कृष्ण के शरीर का रंग नीला माना जाता है। इस नीलेपन

का मतलब जरूरी नहीं है कि उनकी त्वचा का रंग नीला था। हो सकता है, वे श्याम रंग के हों, लेकिन जो लोग जागरूक थे, उन्होंने उनकी ऊर्जा के नीलेपन को देखा और उनका वर्णन नीले वर्ण वाले के तौर पर किया। कृष्ण के बारे में की गई सभी व्याख्याओं में नीला रंग आम है, क्योंकि सभी को साथ लेकर चलना उनका एक ऐसा गुण था, जिससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता। वह कौन थे, वह क्या थे, इस बात को लेकर तमाम विवाद हैं, लेकिन इस बात से कोई इनकार नहीं कर सकता कि उनका स्वभाव सभी को साथ लेकर चलने वाला था।

<u>लाल रंग</u>

अगर आप किसी जंगल से गुजर रहे हैं, तो वहां सब कुछ हरे रंग का होता है, लेकिन वहां लाल रंग भी कहीं दिखाई दे जाता है। अगर कहीं कोई लाल रंग का फूल खिल रहा होगा, तो वह आपका ध्यान अपनी ओर खींचेगा, क्योंकि आपके अनुभव में लाल रंग सबसे चमकीला होता है। बाकी के रंग खूबसूरत हो सकते हैं, अच्छे हो सकते हैं, लेकिन सबसे ज्यादा चमकीला लाल रंग ही है। इसीलिए जब हम फूल का नाम लेते हैं तो ज्यादातर लोगों के दिमाग में जो सबसे पहले रंग आता है, वह है लाल रंग। दरअसल लाल फूल ही असली फूल होता है। बहुत सी चीजें जो आपके लिए महत्वपूर्ण होती हैं, वे लाल ही होती हैं।

रक्त का रंग लाल होता है। उगते सूरज का रंग भी लाल होता है। मानवीय चेतना में सबसे अधिक कंपन लाल रंग ही पैदा करता है। जोश और उल्लास का रंग लाल ही है। आप कैसे भी व्यक्ति हों, लेकिन अगर आप लाल कपड़े पहनकर आते हैं तो लोगों को यही लगेगा कि आप जोश से भरपूर हैं, भले ही आप हकीकत में ऐसे न हों। इस तरह लाल रंग के कपड़े आपको अचानक जोशीला बना देते हैं।

देवी (चैतन्य व नारी स्वरूप) इसी जोश और उल्लास की प्रतीक हैं। उनकी ऊर्जा में भरपूर कंपन और उल्लास होता है। आप देवी मंदिर में जाइए, वह आपको एक जबर्दस्त झटका देती हैं। आप इससे चूक नहीं सकते, क्योंकि वह बेहद जोशपूर्ण हैं। इसी वजह से वह लाल हैं। देवी से संबंधित कुछ खास किस्म की साधना करने के लिए लाल रंग की जरूरत होती है।

मासिक राशि भविष्यफल- अप्रैल 2016

○ डॉ. एन. पी. मित्तल, पलवल

मेष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह विशेष फलदायी नही है। आय-व्यय बराबर रहने की आशा है। सोचे हुए कार्यो में देरी होगी। आप अपनी जिद के कारण नुकसान उठा सकते हैं। मानसिक तनाव में रहेगें। क्योंकि परिवारी जनों में भी सामजस्य बिठाना भी मुश्किल ही होगा। प्रतिष्ठा में भी शत्रुओं के कारण कमी आएगी।

वृष- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह श्रम साध्य आमदनी कराने वाला है जबकि खर्चो की भी अधिकता ही रहेगी। कुछ जातकों को स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। परिवार में सामजस्य बिठाना कठिन होगा। दाम्पत्य जीवन में भी मधुरता की कमी रहेगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें

मिथुन- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय के ओर से यह आमदनी सीमित तथा खर्चा अधिक कराने वाला है। इस माह किसी प्रकार के निवेश में पैसा न लगाएं। शत्रु बनते कार्यो में रूकावट डालेगे। परिवार में सम्बन्ध बनाकर रखने होंगे। समस्याओं में वृद्धि के कारण मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। पक्षियों को दाना डालना श्रेयस्कर रहेगा।

कर्क- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से शुभ फलदायी कहा जाएगा। आय अधिक और व्यय कम होगा किन्तु तीर्थ यात्रा या किसी धर्मानुष्ठान पर व्यय अधिक हो सकता है। कुछ जातकों के भूमि-भवन, वाहन प्राप्ति का भी योग है तो कुछ को सन्तान प्राप्ति का। समाज में मान-सम्मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी।

सिह- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से लाभालाभ की स्थिति लिए रहेगा। आय तथा व्यय लगभग बराबर रहेगा। कुछ जातकों को अपने कार्य क्षेत्र में बदलाव करना पड़ सकता है। किन्तु मानसिक शान्ति बनी रहेगी। परिवार में सांमजस्य बने रहने से भी संतोष मिलेगा। समाज में मान सम्मान बना रहेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे।

कन्या- इस राशि के जातकों के व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह कुल मिलाकर शुभ फलदायी ही कहा जाएगा। कुछ जातक भौतिक वस्तुओं का क्रय भी करेगे। सन्तान की ओर से किसी समस्या के सुलझ जाने से संतुष्टि मिलेगी। कुछ जातकों को पिछला बकाया पैसा मिल सकता है। परिवार में सामजस्य बिठाने में थोड़ी परेशानी आ सकती है।

तुला- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह अधिक परिश्रम कराकर अल्प लाभ देने वाला है। शत्रु सिर उठाएंगे और परेशान करेंगे पर कुछ नये लोगों की मित्रता आपके काम आ सकती है। धैर्य से काम लें और क्रोध न करें। कुछ जातक विदेश जाने का भी विचार बना सकते हैं। कुछ नजदीक की यात्राएं भी सम्भव हैं। कोई शुभ समाचार मिलने सक मन प्रसन्न होगा। परिवार में सामन्जस्य बना रहेगा।

वृश्चिक- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से यह माह लाभालाभ की स्थिति लिये रहेगा। वैसे परिस्थितियां सुधार की ओर है। अपने क्रोध पर काबू रखें। अपने साझेदार अथवा सहयोगियों से तालमेल रखकर चलने में ही फायदा है। हां कुछ जातकों का भूमिभवन के लेन-देन का प्रसंग आ सकता है।

धनु- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से कुल मिलाकर आशिक लाभ वाला कहा जाएगा। मास के पूवार्द्ध में किए गए प्रयास सफल होगे। आपको अपने परिश्रम के फल से राहत मिलेगी। योजना क्रियान्वयन की ओर से अग्रसर होगी। प्रतिष्ठित लोग काम आएगे। परिवार में सामजस्य बना रहेगा। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें।

मकर- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से यह माह कुल मिलाकर फलदायक ही कहा जाएगा। कुछ जातकों का पुराना फंसा हुआ पैसा मिलने से खुशी होगी। योजनाओं का क्रियान्वन होगा। शुभ समाचार मिलेगे। किन्तु इस माह कोई नए शेयर आदि की खरीद न करें। परिवार में उत्पन्न हुए मन मुटाव दूर होगें जिससे शांति मिलेगी।

कुम्भ- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अवरोधों के चलते आमदनी कराने वाला है। अपने व्यय पर नियन्त्रण रखना होगा और कोई भी निर्णय लेने से से भली प्रकार सोचें। छोटी बड़ी यात्राऐं होगी। यात्राओं में सावधानी बरतें तथा किसी अन्जान व्यक्ति से खााने पीने की चीजें न लें। कुछ लोगों को भूमि भवन का लाभ मिल सकता है। समाज में मान सम्मान सामान्य बना रहेगा।

मीन- इस राशि के जातकों के लिए व्यापार-व्यवसाय की ओर से अधिक परिश्रम के पश्चात आंशिक लाभ दिलाने वाला है। किसी नई योजना का क्रियान्वयन होना ही मुश्किल है। परिवार के विषय में ध्यान रहे कि आपके कारण परिवारी जनों को किसी प्रकार का तनाव न हो । छोटी बड़ी यात्रायें होगी जिनमें सावधानी आवश्यक है।

-इति शुभम्

मदद का तरीका

एक दिन यूरोप के महान विद्वान दिदरो के पास एक युवक आया और बोला- मैंने एक किताब लिखी है। मैं चाहता हूं कि छपने के पहले आप उसे एक बार देख लें और अपनी प्रतिक्रिया मुझे बताएं। दिदरो ने उसे अगले दिन आने के लिए कहा। दूसरे दिन जब वह लेखक आया तो दिदरो ने कहा- मुझे बड़ी खुशी है कि तुमने मुझे लक्ष्य करके अपनी पुस्तक में मेरा खूब मजाक उड़ाया है और मुझे बहुत गालियां दी हैं। लेकिन जरा वह तो बताओ कि इससे तुम्हें क्या लाभ है? युवक बोला- कोई प्रकाशक मेरी किताब छापने के लिए तैयार नहीं हो रहा था। मुझे मालूम है कि आपके अनेक दुश्मन हैं और यदि में आपका मजाक उड़ाने वाली पुस्तक लिखूं तो मुझे अच्छा पैसा मिल सकता है। दिदरो ने कहा- यह तुमने बहुत ही बढ़िया किया है। एक काम और करो। यह पुस्तक छपाने के लिए तुम्हें पैसे चाहिए। उसका एक उपाय है। एक व्यक्ति से धर्म को लेकर मेरा गहरा मतभेद है। तुम यह पुस्तक उसे समर्पित कर दो। वह प्रसन्न होकर तुम्हें अवश्य ही आर्थिक सहयोग करेगा। तुम उसके नाम एक शानदार समर्पण पत्र लिखो।

युवक ने कहा- मुझे समर्पण पत्र लिखना नहीं आता। दिदरो ने कहा- मैं ही तुम्हें अच्छा समर्पण पत्र लिख देता हूं। उन्होंने उसी समय समर्पण पत्र लिखकर युवक को दे दिया जिससे युवक का कार्य आसान हो गया। युवक की किताब चर्चित हुई। युवक दिदरो से मिलने आया और बोला- आप महान हैं, आपने खुद की कीमत पर मेरी मदद की। वह दिदरो का शिष्य बन गया।

एक आवश्यक निवेदन

परंपरा-गत तथा आधुनिक संपादन-शैली में रूपरेखा पत्रिका अप्रैल अंक आपके हाथों में है। आपके अत्यधिक आग्रह को बहुमान देते हुए रूपरेखा पत्रिका हर माह पूर्व-वत् आपको मिलती रहेगी। आपके सुझाव भी सादर आमंत्रित हैं- -व्यवस्थापक

(1) समाज-सेवी श्री बी.के. मोदी पूज्य आचार्यश्री के साथ विशेष मंत्रणा करते हुए।
(2) पूज्यगुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी की जीवनी हंस अकेला उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक जी को भेंट करते हुए उनके शिष्य योगी अरूण तिवारी। (राजभवन, उत्तर प्रदेश, लखनऊ)।

(1) भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस के अवसर पर पूज्यगुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य योगी अरूण तिवारी के साथ भारतीय तिरंगे के रंग में रंगी स्वीडिश कलाकार। (स्टॉकहोम, स्वीडन)।
(2) भारतीय दूतावास द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस के अवसर पर पूज्यगुरूदेव आचार्यश्री रूपचन्द्र जी के शिष्य योगी अरूण तिवारी के साथ में हैं स्वीडन के शहरी विकास व संचार मंत्री मेहमेट कैग्लन (स्टॉकहोम, स्वीडन)।

–वार्षिक परीक्षा परिणाम के पश्चात सरस्वती बाल मंदिर परिसर अमर कालोनी में साध्वी समताश्री जी महाराज, प्रधानाचार्य, स्कूल मैनेजमेंट टीम, छात्र और छात्रायें पदकों के साथ। मानव मंदिर गुरूकुल के सभी छात्र व छात्राएं इसी स्कूल में शिक्षार्थ आते हैं।

P. R. No.: DL(S)-17/3082/2015-17
Rgn. No.: DELHIN/2000/2473
Date of Post : 27-28

-Indian Council of Religious Leaders द्वारा 21 फरवरी 2016. वृन्दावन में सर्वज्ञान-संगोष्ठी में उद्‌बोधन-प्रवचन करते हुए पूज्य आचार्यश्री रूपचन्द्र जी। समाज-सेवी श्री बी.के. मोदी द्वारा अपनी मातुश्री दयावतीजी की पुण्य-तिथि पर आयोजित इस आध्यात्मिक संगोष्ठी में जगद्‌गुरू शंकराचार्य, अनेक महामंडलेश्वर, साध्वी ऋतंभराजी, सांसद हेमामालिनी आदि की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

प्रकाशक व मुद्रक : श्री अरुण तिवारी, मानव मंदिर मिशन ट्रष्ट (रजि.) के.एच.–57 जैन आश्रम, रिंग रोड़, सराय काले खाँ, इंडियन ऑयल पेट्रोल पम्प के पीछे, पो. बो.–3240, नई दिल्ली–110013, आई. जी. प्रिन्टर्स 104 (DSIDC) ओखला फेस–1 से मुद्रित।

संपादिका : श्रीमती निर्मला पुगलिया